Durga Tutorial

Online Classes

बिहार बोर्ड और CBSE बोर्ड की तैयारी

Free Notes के लिए

www.durgatutorial.com

पर जाएँ।

ज्यादा जानकारी के लिए हमें
Social Media पर Follow करें।

https://www.facebook.com/durgatutorial23/?modal=admin_todo_tour

https://twitter.com/DurgaTutorial

https://www.instagram.com/durgatutorial/

https://www.youtube.com/channel/UC5AJcz6Oizfohqj7eZvgeHQ

9973735511

कक्षा 11 समाजशास्त्र
एनसीईआरटी प्रश्न-उत्तर
पाठ - 7 ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था

---

1. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि तीव्र सामाजिक परिवर्तन मनुष्य के इतिहास में तुलनात्मक रूप से नवीन घटना है? अपने उत्तर के लिए कारण दें।

उत्तर- तीव्र सामाजिक परिवर्तन मनुष्य के इतिहास में तुलनात्मक रूप से नवीन घटना है इसके कारण निम्नलिखित है:

- ऐसा माना जाता है कि पृथ्वी पर मानव जाति का अस्तित्व तकरीबन 5,00,000 (पाँच लाख) वर्षों से है,लेकिन उनकी सभ्यता का अस्तित्व मात्र 6000 वर्षों से ही माना जाता रहा है।
- मात्र पिछले 100 वर्षों में इसके परिवर्तन में तेजी आई है। जिस गति से परिवर्तन होता है? वह चूँकि लगातार बहता रहता है, शायद यही सही है कि पिछले सौ वर्षों में, सबसे अधिक परिवर्तन प्रथम पचास वर्षों की तुलना में अंतिम पचास वर्षों में हुए हैं।
- इन सभ्य माने जाने वाले वर्षों में, मात्र 400 वर्षों से हमने लगातार एवं तीव्र परिवर्तन देखें।
- हैं।आखिर पचास वर्षों के अंतर्गत, पहले तीस वर्षों की तुलना में विश्व में परिवर्तन अंतिम तीस वर्षों में अधिक आया।

---

2. सामाजिक परिवर्तन को अन्य परिवर्तनो से किस प्रकार अलग किया जा सकता है?

उत्तर- सामाजिक परिवर्तन को अन्य परिवर्तनो से निम्नलिखित प्रकार से अलग किया जा सकता है-

- 'सामाजिक परिवर्तन' एक सामान्य अवधारणा है,इसका प्रयोग किसी भी परिवर्तन हेतु किया जा सकता है। जो अन्य अवधारणाओं के माध्यम से परिभाषित नहीं किया जा सकता; जैसे-आर्थिक अथवा राजनैतिक परिवर्तन।
- सामाजिक परिवर्तन में सभी परिवर्तनों को शामिल हीं करते, मात्र बड़े परिवर्तन जो, वस्तुओं को बुनियादी तौर पर बदल देते हैं। सामाजिक परिवर्तन एक व्यापक शब्द है। इसे और विशेष बनाने के लिए स्रोतों अथवा कारकों को ज़्यादा-से-ज़्यादा विभाजित करने की कोशिश की जाती है। प्रकृति के द्वारा अथवा समाज पर इसके प्रभाव अथवा इसकी गति के आधार पर इसका वर्गीकरण किया जाता है।
- सामाजिक परिवर्तन का सरोकार उन परिवर्तनों से है जो आवश्यक हैं-अर्थात, परिवर्तन जो किसी वस्तु अथवा परिस्थिति की मूलाधार संरचना को समयावधि में बदल दें।

---

3. संरचनात्मक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं? पुस्तक से अलग उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- संरचनात्मक परिवर्तन के कुछ अन्य उदाहरण :

- संरचनात्मक परिवर्तन के द्वारा समाज की संरचना में हुए परिवर्तनो को देखा जाता है, साथ-ही-साथ सामाजिक संस्थाओं

तथा नियमों के परिवर्तन को दिखाता है जिनसे इन संस्थाओं को चलाया जाता है।

- उदाहरणत : कागज़ी रुपये का मुद्रा के रूप में प्रादुर्भाव वित्तीय संस्थाओं और लेन-देन में बड़ी मात्रा में परिवर्तन लेकर आया। इससे पूर्व, मुख्य रूप से सोने-चाँदी के रूप में मूल्यवान धातुओं का इस्तेमाल मुद्रा के रूप में होता था।
- कागज़ी मुद्रा के पीछे यह विचार था कि समान अथवा सुविधाओं के लेने-देन में जिस चीज़ का प्रयोग हो, उसका कीमती होना जरूरी नहीं। जब तक यह मूल्य को ठीक से दिखाता है अर्थात जब तक यह विश्वास को जगाए रखता है-तकरीबन कोई भी चीज़ पैसे के रूप में काम कर सकती है।
- समाज में मूल्यों तथा मान्यताओं में परिवर्तन भी सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायक होते हैं।
- सोने तथा चाँदी की मात्रा से सिक्के की कीमत मापी जाती थी।
- इसके विपरीत, कागज़ी नोट की कीमत का उस लागत से कोई संबंध नहीं होता था, जिस पर वह छापा जाता था और न ही उसकी छपाई से।
- उदाहरणत: बच्चों तथा बचपन से संबंधित विचारों तथा मान्यताओं में परिवर्तन बहुत आवश्यक तरह के सामाजिक परिवर्तन में सहायक सिद्ध हुआ है। एक समय था जब बच्चों को साधारणतः 'आवश्यक' समझा जाता था। बचपन से संबंधित कोई विशिष्ट संकल्पना नहीं थी, जो इससे जुड़ी हो कि बच्चों के लिए क्या सही था। अथवा क्या गलत।
- यह उन्नीसवीं तथा पूर्व बीसवीं शताब्दियों के अंतर्गत बचपन जीवन की एक विशिष्ट अवस्था है यह संकल्पना प्रभावी हुई है। इस समय छोटे बच्चों का काम करना अविधारणीय हो गया तथा अनेक देशों ने बाल श्रम को कानून द्वारा बंद कर दिया।
- उदाहरणत : उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में, यह ठीक माना जाने लगा कि बच्चे जितनी जल्दी काम करने के योग्य हो जाएँ, काम पर लग जाएँ, बच्चे अपने परिवारों की काम करने में मदद पाँच अथवा छह वर्ष की आयु से ही प्रारंभ कर देते थे; प्रारंभिक फैक्ट्री व्यवस्था बच्चों के श्रम पर आश्रित थी।

---

4. पर्यावरण संबंधित कुछ सामाजिक परिवर्तनों के बारे में बताइए।

उत्तर- पर्यावरण संबंधित सामाजिक परिवर्तन इस प्रकार है-

- प्राकृतिक विपदाओं के विभिन्न उदाहरण इतिहास में देखने को मिल जाएँगे, जो समाज को पूरी तरह से परिवर्तित कर देते हैं तथा पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं। परिवर्तन लाभ के लिए पर्यावरणीय या पारिस्थितिकीय कारकों का न केवल विनाशकारी होना अनिवार्य है, अपितु उसे सृजनात्मक भी होना अनिवार्य है।
- प्रकृति, पारिस्थितिकी और भौतिक पर्यावरण का समाज की संरचना और स्वरूप पर आवश्यक प्रभाव हमेशा से रहा है।
- त्वरित तथा विध्वंसकारी घटनाएँ, जैसे-ज्वालामुखी विस्फोट, बाढ़, भूकप तथा ज्वारभाटीय तरंगें (जैसा कि दिसंबर 2004 में सुनामी की तरंगों से श्रीलंका, अंडमान द्वीप, तमिलनाडु, इंडोनेशिया के कुछ भाग इसके दवरा घेर लिए गए) समाज को पूरी तरह से बदल देते हैं। ये परिवर्तन, अपरिवर्तनीय होते हैं, अर्थात् ये स्थायी होते हैं तथा चीज़ों को वापस अपनी पूर्वस्थिति में नहीं आने देते।विगत समय के संदर्भ में यह विशेष रूप से सही है। उस समय मानव प्रकृति के प्रभावों को सोचने तथा सहने में अक्षम था।
- उदाहरणत: मरुस्थलीय वातावरण में रहने वाले लोगों के लिए एक स्थान पर रहकर कृषि करना संभव नहीं था, जैसे, मैदानी भागों अथवा नदियों के किनारे इत्यादि। अतः जिस प्रकार का भोजन वे करते थे, कपड़े पहनते थे, जीविका चलाते

थे तथा सामाजिक अन्योन्यक्रिया ये सब बहुत सीमा तक उनके पर्यावरण के भौतिक तथा जलवायु की स्थितियों से निर्धारित होता है।

5. वे कौन से परिवर्तन हैं, जो तकनीक तथा अर्थव्यवस्था द्वारा लाए गए हैं?

उत्तर- निम्नलिखित वे तथ्य हैं, जिनके द्वारा तकनीक तथा अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाए गए हैं :

- वर्तमान समय में तकनीक तथा आर्थिक परिवर्तन के संयोग से समाज में हुए बहुत तेजी से बदलाओ को देखा जा सकता है।
- वाष्प शक्ति की खोज ने मानव को ऐसी शक्ति से अवगत कराया जिसके द्वारा बड़े उद्योगों को शक्ति मिले तथा यह पशुओं तथा मनुष्यों के मुकाबले कई गुणा अधिक थी, इसके साथ ही यह बिना रुकावट के लगातार चलने वाली भी थी,इस शक्ति से अवगत कराया।
- तकनीक समाज को विभिन्न रूपों में प्रभावित करती हुए देखि जा सकती है। इसके द्वारा हम प्रकृति को कई तरीकों से नियंत्रित उसके अपने अनुरूप ढालने में अथवा दोहन करने में सहायता प्राप्त कर सकते है। बाज़ार जैसी शक्तिशाली संस्था से जुड़कर तकनीकी परिवर्तन अपने सामाजिक प्रभाव की तरह ही प्राकृतिक कारकों; जैसे-सुनामी तथा तेल की खोज की तरह प्रभावी हो सकते हैं।
- वाष्पचलित जहाज़ों द्वारा समुद्री यातायात में तीव्रता आई इसके साथ ही यह विश्वसनीय भी बनी और इसमें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा प्रवास की गति को बदलकर रख दिया। दोनों परिवर्तनों ने विकास की विशाल लहर पैदा की जिसने न केवल अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया अपितु विश्व समय के सामाजिक सांस्कृतिक तथा जनसांख्यिक रूप को बदल दिया।
- रेल ने उद्योग तथा व्यापार को अमेरिका महाद्वीप तथा पश्चिमी विस्तार की सक्षम किया। भारत में भी, रेल परिवहन ने अर्थव्यवस्था को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेषकर 1853 में भारत में आने से लेकर मुख्यतः प्रथम शताब्दी तक।
- यातायात के साधनों; जैसे-वाष्पचलित जहाज़ तथा रेलगाड़ी ने दुनिया की अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक भूगोल को बदलकर रख दिया।
- कई बार आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन, जो प्रत्यक्ष तकनीकी नहीं होते हैं, भी समाज को बदल सकते हैं। जाना-पहचाना ऐतिहासिक उदाहरण, रोपण कृषि-यहाँ बड़े पैमाने पर नकदी फसलों; जैसे-गन्ना, चाय अथवा कपास की खेती की जाती है, ने श्रम के लिए भारी माँग उत्पन्न की।
- उसी बिंदु से दी गई परिस्थितियों का लाभ उठा, बारूद द्वारा युद्ध की तकनीक में परिवर्तन तथा कागज़ की छपाई की क्रांति ने समाज को हमेशा के लिए परिवर्तित कर दिया।
- कभी-कभी तकनीक का सामाजिक प्रभाव पूर्वव्यापी भी होता है। तकनीकी आविष्कार अथवा खोज का कभी-कभी तात्कालिक प्रभाव संकुचित होता है, जो देखने पर लगता है, जैसे सुप्तावस्था में हो। बाद में होने वाले परिवर्तन आर्थिक संदर्भ में उसी खोज की सामाजिक महत्ता को एकदम बदल देते हैं तथा उसे ऐतिहासिक घटना के रूप में मान्यता देते हैं। इसका उदाहरण चीन में बारूद तथा कागज़ की खोज है, जिसका प्रभाव सदियों तक संकुचित रहा, जब तक कि उनका प्रयोग पश्चिमी यूरोप के आधुनिकीकरण के संदर्भ में नहीं हुआ।

- भारत में असम के चाय बगानों में काम करने वाले ज़्यदातर लोग पूर्वी भारत के थे (विशेषकर झारखंड तथा छत्तीसगढ़ के आदिवासी भागों से), जिन्हें काम की तलाश के लिए अपने निवास स्थान से प्रवास करना पड़ा।

---

6. सामाजिक व्यवस्था का क्या अर्थ है तथा इसे कैसे बनाए रखा जा सकता है?

उत्तर- सामाजिक व्यवस्था : यह एक सुस्थापित समाजिक प्रणालियाँ हैं, जो परिवर्तन का प्रतिरोध तथा उसे पुनः नियमित करती हैं।

सामाजिक व्यवस्था के द्वारा सामाजिक परिवर्तनों को रोका जाता है इसके साथ हतोत्साहित करती हैही तथा बहुत कम सीमा तक नियंत्रित करती है। अपने आपको एक शक्तिशाली तथा प्रासंगिक सामाजिक व्यवस्था के रूप में सुव्यवस्थित करने के लिए प्रत्येक समाज को अपने आपको समय के साथ पुनरूत्पादित करना तथा उसके स्थायित्व को बनाए रखना पड़ता है। स्थायित्व के लिए जरूरी हैं कि चीज़ें कमोबेश वैसी ही बनी रहें जैसी वे हैं-अर्थात व्यक्ति निरंतर समाज के नियमों का पालन करता रहें सामाजिक क्रियाएँ एक ही तरह के परिणाम दें और साधारणतः व्यक्ति तथा संस्थाएँ पूर्वानुमानित रूप में आचरण करें।

इसे निम्नलिखित तरीको के द्वारा बनाए रखा जा सकता है :

- समाज के शासक एवं प्रभावशाली वर्गो द्वारा ज़्यादातर सामाजिक परिवर्तन का विरोध किया जाता हैं, जो उनकी स्थिति में परिवर्तन कर सकते हैं, क्योंकि स्थायित्व में उनका अपना हित होता है। वहीं दूसरी तरफ अधीनस्थ अथवा शोषित वर्गों का हित परिवर्तन में होता है। 'सामान्य' स्थितियाँ अधिकांशतः अमीर तथा शक्तिशाली वर्गों की तरफदारी करती हैं तथा वे परिवर्तन के प्रतिरोध में सफल होते हैं।
- सामाजिक व्यवस्था सामाजिक संबंधों की विशिष्ट पद्धति तथा मूल्यों एवं मानदंडों के सक्रिय अनुरक्षण तथा उत्पादन को निर्देशित करती है। विस्तृत रूप में, सामाजिक व्यवस्था इन दो में से किसी एक तरीके से प्राप्त की जा सकती है, जहाँ व्यक्ति नियमों तथा मानदंडों को स्वतः मानते हों अथवा कहाँ मानदंडों को मानने के लिए व्यक्तियों को बाध्य क्रिया जाता हो।
- सामाजीकरण पृथक परिस्थितियों में अधिक या न्युनतः कुशल हो सकता है, परंतु वह कितना ही कुशल क्यों न हो, यह व्यक्ति की दृढ़ता को पूर्ण रूप से समाप्त नहीं कर सकता है।
- सामाजीकरण, समाजिक व्यवस्था को वैसी ही स्थिति में रखने के लिए विभिन्न प्रयास करता है, परंतु यह प्रयास भी अपने आप में पूर्ण नहीं होता।
- अतः अधिकतर आधुनिक सामज कुछ रूपों में संस्थागत तथा सामाजिक मानदंडों को बनाए रखने के लिए शक्ति अथवा दबाव पर निर्भर करते हैं।
- सत्ता की परिभाषा अधिकांशतः इस रूप में दी जाती है कि सत्ता स्वेच्छानुसार एक व्यक्ति से मनचाहे कार्य को करवाने की क्षमता रखती है। जब सत्ता का संबंध स्थायित्व तथा स्थिरता से होता है तथा दूसरे जुड़े पक्ष अपने सापेक्षिक स्थान के अभ्यस्त हो जाते हैं, तो हमारे सामने प्रभावशाली स्थिति उत्पन्न होती है।
- यदि सामाजिक तथ्य (व्यक्ति, संस्था अथवा वर्ग) नियमपूर्वक अथवा आदतन सत्ता की स्थिति में होते हैं, तो इसे प्रभावी माना जाता है।
- साधारण समय में, प्रभावशाली संस्थाएँ, समूह तथा व्यक्ति समाज में निर्णायक प्रभाव रखते हैं। ऐसा नहीं है कि उन्हें

Baniapur

चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ता, परंतु यह विपरीत तथा विशिष्ट परिस्थितियों में होता है।

7. सत्ता क्या है तथा यह प्रभुता तथा कानून से कैसे संबंधित है?

उत्तर- सत्ता : मैक्स वेबर के अंतर्गत,'संता कानूनी शक्ति है। अर्थात शक्ति न्यायसंगत तथा ठीक समझी जाती है।' उदाहरणत : एक स्कूल शिक्षक अथवा एक पुलिस ऑफिसर एक जज, सब अपने कार्य में निहित सत्ता का प्रयोग करते हैं।

सत्ता, प्रभुता तथा कानून से निम्नलिखित रूप से संबंधित है :

- ये शक्ति उन्हें विशेषकर उनके सरकारी कायों की रूपरेखा को देखते हुए प्रदान की गई है-लिखित कागज़ातों द्वारा सत्ता क्या कर सकती है तथा क्या नहीं, का बोध होता है।
- कानून, किसी भी समाज के सुस्पष्ट संहिताबद्ध मानदंड तथा नियम होते हैं। यह ज़्यादातर समाज में लिखित रूप में पाए जाते है तथा नियम किस प्रकार बनाए, इनका बदलाव तथा कोई उनको तोड़ता है तो क्या करना चाहिए।
- कानून नियमों के औपचारिक ढाँचे का निर्माण करता है जिसके द्वारा समाज शासित होता है। कानून प्रत्येक नागरिक पर लागू होता है। चाहे एक व्यक्ति के रूप में 'मैं' कानून विशेष से सहमत हूँ या नहीं, यह नागरिक के रूप में 'मुझे जोड़ने वाली ताकत है, तथा अन्य सभी नागरिकों को उनकी मान्यताओं से हटकर।'
- प्रभाव, शक्ति के तहत कार्य करता है, परंतु इनमें से अधिकांश शक्ति में कानूनी शक्ति अथवा सत्ता होती है, जिसका एक बृहत्तर भाग कानून द्वारा संहिताबद्ध होता है।
- कानूनी संरचना तथा संस्थागत मदद के कारण सहमति तथा सहयोग नियमित रूप से तथा भरोसे के आधार पर लिया जाता है। यह शक्ति के प्रभाव क्षेत्र अथवा प्रभावितों को समाप्त नहीं करता। कई प्रकार की शक्तियाँ हैं, जो समाज में प्रभावी हैं हालाँकि वे गैरकानूनी हैं, और यदि कानूनी हैं तब कानूनी रूप से संहिताबद्ध नहीं हैं।

8. गाँव, कस्बा तथा नगर एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर- गाँव, कस्बा तथा नगर एक दूसरे से निम्न तत्थ्यो के आधार पर भिन्न हैं :

- गाँव, ग्रामीण समुदाय की एक इकाई है, जो ग्रामीण क्षेत्र में जीवन को बनाय रखती है और इसके कार्यों से भिन्न रहती है।
- सामाजिक संरचना में आए महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों द्वारा गाँवों का उद्भव हुआ तथा जहाँ खानाबदोशी जीवन पद्धति, शिकार, भोजन संकलन तथा अस्थायी कृषि पर आधारित थी, या संक्रमण स्थायी जीवन में हुआ।
- इसमें कृषि को एक सरल समुदाय कार्य माना जाता है।
- सामाजिक परिवर्तन धीमी गति समाज के नियमो में बदलाव लाते हुए दिखाई देते है।
- उनके जीवन जटिल और बहुउद्देशीय होते हैं। ये सामान्यतया व्यापारिक केंद्र हैं।
- नगरों में उच्च जनसंख्या, अति जनसंख्या घनत्व और विजातीयता पाई जाती है जो मुख्य रूप से गैर-कृषि धंधों से जुड़े रहते हैं।नगरों में सामाजिक परिवर्तन तीव्र गति से होता है।

9. ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था की कुछ विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर- ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :

- गाँवों का आकार बहुत छोटा होता है। यह ज़्यादातर व्यक्तिगत संबंधों का दर्शाते हुए दिखाई देते हैं। गाँव के लोग उस क्षेत्र के सभी लोगो से भली-भाँती अवगत होते है।
- परंपरागत तरीकों से गाँव की सामाजिक संरचना चालित होती है। इसलिए सामाजिक संस्थाएँ जैसे-जाति, धर्म तथा सांस्कृतिक एवं परंपरागत सामाजिक प्रथाओं के दूसरे स्वरूप यहाँ ज़्यादा प्रभावशाली हैं।
- इन कारणों से जब तक कोई विशिष्ट परिस्थितियाँ न हों, गाँवों में परिवर्तन नगरों की अपेक्षा धीमी गति से होता है।
- यदि गाँव में पहले से ही मज़बूत शक्ति संरचना होती तो उसे उखाड़ फेंकना बहुत कठिन होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति संरचना के संदर्भ में होने वाला परिवर्तन और भी धीमा होता है, क्योंकि वहाँ की सामाजिक व्यवस्था अधिक मज़बूत और स्थिर होती है।
- गाँव में प्रभावशाली वर्गों की शक्ति अन्य वर्गो के अंतर्गत बहुत ज़्यादा है, क्योंकि वे रोज़गार के साधनों तथा ज़्यादातर अन्य संसाधनों को नियंत्रित करते हैं। अतः गरीबों की प्रभावशाली वर्गों पर निर्भर होना पड़ता है, क्योंकि उनके पास रोज़गार के अन्य साधन अथवा सहारा नहीं होता।
- ग्रामीण इलाके में, समाज के शोषित समूहों के पास अपने नगरीय भाइयों की तुलना में अभिव्यक्ति के दायरे बहुत कम होते हैं। गाँव में व्यक्ति एक-दूसरे से सीधा संबद्ध होता है। इसलिए व्यक्ति विशेष का समुदाय के साथ असहमत होना कठिन होता है और इसका उल्लंघन करने वाले को सबक सिखाया जा सकता है।
- जनसंख्या का उच्च घनत्व स्थान पर अत्यधिक जोर देता है तथा तार्किक स्तर पर जटिल समस्याएँ खड़ी करता है। कस्बा सामाजिक व्यवस्था की बुनियादी कड़ी है, जो कि नगर की देशिक जीवनक्षमता को आश्वस्त करें।
- समय के साथ अन्य संचार के साधनों में भी सुधार आया है। इसकी वजह मात्र कुछ एक गाँव 'एकांत' तथा 'पिछड़ा' होने का दावा कर सकते हैं।
- अन्य परिवर्तन आने में भी समय लगता है, क्योंकि गाँव बिखरे होते हैं तथा पूरी दुनिया से एकीकृत नहीं होते जैसे-नगर तथा कस्बे होते हैं।
- इसका अर्थ है कि संगठन तथा प्रबंधन कुछ चीज़ों को जैसे निवास तथा आवासीय पद्धति; जन यातायात के साधन उपलब्ध कर सकें, ताकि कर्मचारियों की बड़ी संख्या को कार्यस्थल से लाया तथा ले जाया जा सके; आवासीय सरकारी तथा औद्योगिक भूमि उपयोग क्षेत्र के सह-अस्तित्व की व्यवस्था।
- सभी प्रकार के जनस्वास्थ्य, स्वच्छता, पुलिस सेवा, जनसुरक्षा तथा कस्बे के शासन पर नियंत्रण की आवश्यकता है।
- वे कार्य जो समूह, नृजातीयता, धर्म, जाति इत्यादि के विभाजन तथा तनाव से न केवल जुड़े, बल्कि सक्रिय भी होते हैं।

Durga Tutorial 1996 Baniapur

Durga Tutorial

Baniapur

Durga Tutorial

Online Classes

Thank You For Downloading Notes

ज्यादा जानकारी के लिए हमें
Social Media पर Follow करें।

https://www.facebook.com/durgatutorial23/?modal=admin_todo_tour

https://twitter.com/DurgaTutorial

https://www.instagram.com/durgatutorial/

https://www.youtube.com/channel/UC5AJcz6Oizfohqj7eZvgeHQ

9973735511